Workshop on

Socio Economic Development through Poplar Plantation in Bihar

29th September, 2015

A one day Workshop on *Socio Economic Development through Poplar Plantation in Bihar* was organized on 29th Septemeber, 2015 by the Institute of Forest Productivity (IFP), Ranchi at Hotel Patliputra Ashoka, Patna to assess the impact of the project, *Samuday Aadharit Samanvit Van Prabandhan evam Sanrakshan Yojana* and interact with the project execution team.

The workshop was inaugurated by Dr. Ashwani Kumar, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE), Dehradun. The workshop was well attended by dignitaries Dr.S.P.Singh, DDG (Administration), ICFRE, Dr. N.S.Bisht, Director (IC), ICFRE, Sh. Basheer Ahmed Khan, PCCF, Bihar, Dr. B. C. Nigam, PCCF, Jharkhand, Sh. Dinesh Kumar, CF, Jharkhand and Sh. Biplav Kumar Mishra, ACF, Jharkhand. Dignitaries from IFP, Ranchi included Dr. S. A. Ansari, Director and all scientists of IFP, Ranchi. Approximately 30 farmers from different villages of Vaishali district also attended the workshop.

The workshop deliberated on the salient findings and achievements of the Bihar Project and discussed the developments towards strategy for starting the second phase of the project. Dr. S. A. Ansari in his welcome address discussed the objectives of the workshop and called upon all the senior officials to provide impetus for consolidation of the project completion report for benefit of stakeholders in Bihar. In his keynote address, Dr. Ashwani Kumar, DG, ICFRE lauded the achievements and benefits of the project and called for useful insights and recommendations to achieve the target.

Sh. B.A.Khan, PCCF, Bihar thanked the Indian Council of Forestry Research and Education for their efforts towards encouraging agroforestry and congratulated the farmers of Bihar to have shown courage to adopt new species and technologies. Dr. Nigam, PCCF, Jharkhand while addressing the house discussed the growing popularity of poplar species and praised the achievements of the farmers in Bihar. The workshop was hosted by Dr. Sanjay Singh, Scientist-E, IFP, Ranchi and Dr. Sharad Tiwari, Scientist-E from IFP; proposed the Vote of Thanks.

Jadua Site-I in Hajipur district of Bihar was developed as ""*Poplar Extension cum Training Centre*" to cater to the needs of farmers enthusiastic about planting poplar and developing agroforestry in the state. This "*Poplar Extension cum Training Centre*" was inaugurated on 28th September, 2015 by Dr. Ashwani Kumar, Director General, Indian Council of Forestry Research & Education (ICFRE), Dehradun and Sh. Basheer Ahmad Khan, PCCF, Bihar.

Dr. S.A.Ansari, Director, IFP, Ranchi welcoming Dr. Ashwani Kumar, DG, ICFRE

Dignitaries lighting the lamp while inaugurating the workshop

Dr. S.A.Ansari, Director, IFP, Ranchi presenting the welcome address

Dr. Ashwani Kumar, DG, ICFRE addressing the workshop

Sh. Basheer Ahmad Khan, PCCF, Bihar addressing the workshop

Dr. B.C. Nigam, PCCF, Jharkhand addressing the workshop

Dr. S.P. Singh, DDG (Administration), ICFRE addressing the workshop

Dr. N.S. Bisht, Director (IC), ICFRE addressing the workshop

Delegates at the workshop

Delegates at the workshop

Dr. Ashwani Kumar, DG, ICFRE inaugurating the *Poplar Extension cum Training Centre* at Jadua, Hahipur, Bihar.

Dr. Ashwani Kumar, DG, ICFRE addressing the gathering at *Poplar Extension cum Training Centre* at Jadua, Hahipur, Bihar.

Media coverage of the workshop and inauguration at Hajipur, Bihar

प्रभात खबर

पटना
बुधवार, 30 सितंबर, 2015
आश्विन कृष्ण 2 संवत 2072

जिले में लगाये गये 76 लाख पौधे

हाजीपुर. पोपलर की खेती किसानों की आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रही है, क्योंकि यह सबसे कम समय में तैयार होने वाला पेड़ है. यह बात अखिल भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के निदेशक डॉ अश्विनी कुमार ने कहीं. वे नगर के जढुआ मुहल्ला में पोपलर विस्तार सह प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने कहा कि वर्ष 2006 में इस योजना का शुभारंभ हुआ था और तबसे इस जिले में 76 लाख पौधे लगाये गये. उन्होंने बताया कि यह योजना भारत सरकार के योजना आयोग द्वारा सम विकास योजना के अंतर्गत वित्त प्रदत्त थी. वैशाली जिले में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की क्षेत्रीय इकाई वन उत्पादकता संस्थान रांची द्वारा चलाया जा रहा है. वन विभाग के सहयोग से संचालित इस योजना में कृषकों की भूमि पर तकनीकी ज्ञान, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री, प्रशिक्षण, प्रसार, पौधशाला की स्थापना, किसान पौधशाला का प्रशिक्षण दिया गया. जिले में वन नर्सरी उद्यमियों को भी मार्गदर्शन मिला और उनका सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान हुआ.

पापुलर हो रहा पोपलर, 61 हजार किसानों ने लगा डाले 76 लाख पौधे

समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना के तहत लगाए जा रहे पौधे

जढुआ में पोपलर एक्सटेंशन, ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन करते एफआरआई विवि के चांसलर डॉ. अश्विनी व चीफ कंजरवेटर बीए खान।

सिटी रिपोर्टर | हाजीपुर

समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना के तहत वैशाली जिले के 1396 गांवों के 61 हजार किसानों की जमीन पर 76 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं। भारतीय अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (देहरादून) के दिशा-निर्देश में चलाए जा रहे पोपलर आधारित कृषि वानिकी के प्रथम चरण की यह उपलब्धि है। केन्द्र सरकार के नीति आयोग ने राष्ट्रीय समविकास योजना के तहत इस महत्वाकांक्षी योजना को कार्यान्वित करने की मंजूरी दी थी। हाजीपुर के जढुआ साइट पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के डा. अश्विनी कुमार एवं प्रधान मुख्य वन संरक्षक बीए खान ने संयुक्त रूप से नए साइट का उद्घाटन करने के बाद उपस्थित लोगों को यह जानकारी दी। डा. कुमार ने बताया कि पोपलर तेजी से बढ़ने वाला औद्योगिक प्रजाति का पौधा है। पूरा विश्व पोपलर के वन लगाकर पर्यावरण संतुलन ठीक करने तथा व्यवसायिक जरूरतें पूरा करने के प्रयास में जुटा है। आठ से दस सालों में पोपलर के पौधे परिपक्व होकर वृक्ष बन जाते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए पोपलर आधारित कृषि वानिकी को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस परियोजना के प्रयासों से वन नर्सरी पर आश्रित उद्यमियों का आर्थिक, सामाजिक उत्थान हुआ। माडल नर्सरी, प्रदर्शन केंद्र, क्लोनल उद्यान और हेज बगीचे की स्थापना भी महत्वपूर्ण गतिविधियों में शामिल है। हाजीपुर में उत्पादित वैशाली पोपलर को पूरे उत्तरी बिहार में अपनाया जा रहा है। उन्होंने लोगों को अपनी जमीन में पोपलर का पौधा लगाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि इसकी खासियत यह है कि कृषि योग्य भूमि में पौधा लगा कर खेती बारी भी की जा सकती है। सघन रूप से पौधे को लगाया जाए तो लाभ ही लाभ है।

वैशाली जागरण

पटना, 29 सितंबर 2015 दैनिक जागरण | 5

हाजीपुर में शुरू हुआ पोपलर विस्तार सह प्रशिक्षण केंद्र

जागरण संवाददाता, हाजीपुर : बिहार में पोपलर वृक्षारोपण के माध्यम सामाजिक एवं आर्थिक विकास काफी हद तक संभव है। अभी वैशाली जिले के लगभग 1366 गांवों के 61 हजार से ज्यादा किसानों की खेतों में पोपलर, बांस, कदंब, सेमल आदि विभिन्न प्रजातियों के कुल 76 लाख पौधे लगाये गये हैं। ये बातें भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के महानिदेशक डॉ. अश्विनी कुमार ने कही। वे यहां जढुआ में पोपलर विस्तार सह प्रशिक्षण केंद्र के उदघाटन के मौके पर बोल रहे थे। प्रशिक्षण का शुभारंभ श्री कुमार और बिहार के मुख्य वन संरक्षक बीएन खान ने संयुक्त रूप से किया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि

उद्घाटन के मौके पर उपस्थित पदाधिकारी

आईसीएफआरआई देहरादून के दिशानिर्देश में समुदाय आधारित वन प्रबंधन एवं संरक्षण योजना के तहत वैशाली और आसपास के जिलों में पोपलर आधारित कृषि वानिकी का प्रथम चरण लागू किया गया है। इस योजना का शुभारंभ निति आयोग ने राष्ट्रीय सम विकास योजना के तहत शुरू की गयी थी। जिले में यह योजना वर्ष 2006 से ही चलायी जा रही है।

साथ ही यह भी बताया गया कि पोपलर विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली औद्योगिक प्रजाति है। इसकी कटाई 8-10 वर्षों के अंदर ही कर ली जाती है। पोपलर का पेड़ एक ओर जहां कम समय में तैयार हो जाता है वहीं किसानों को इससे ज्यादा मुनाफा भी मिलता है। इसकी खेती से किसानों का सामाजिक और आर्थिक विकास हुआ है।

पापुलर की खेती कर किसान उठाएं दोगुना लाभ

पटना : खेतों में पापुलर के पेड़ लगाने के साथ खेती भी की जा सकती है। किसानों को इससे दोहरा लाभ मिलेगा। आम व अमरूद के पेड़ों में फैलाव होने से किसान इन फलों की बागों में फसलें को नहीं उगा पाते हैं। ये बातें भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ. अश्विनी कुमार कही। मौका था पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के तत्वावधान में वन उत्पाद संस्थान रांची की ओर से आयोजित 'बिहार में पापलुर पौधरोपण के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक विकास विषयक कार्यशाला' का।

दैनिक भास्कर हाजीपुर पटना, मंगलवार, 29 सितंबर, 2015 3

कृषि वैज्ञानिकों ने वानिकी के माध्यम से तैयार की बिहार के किसानों को ट्रेंड कर समृद्ध करने की योजना

इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्टिविटी सेंटर खुला

हाजीपुर | गोपाल तिवारी

वैशाली सहित पूरे बिहार के किसानों के लिए एक बड़ी खुशखबरी है। कृषि के क्षेत्र में अब तक किसानों को बाढ़-सुखाड़ से हो रही परेशानियों को दूर करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने वानिकी के माध्यम से समृद्ध करने की योजना तैयार की है। हाजीपुर के जढुआ में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण सेंटर खोला गया है। सोमवार को इसका उद्घाटन वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक डा. अश्वनी कुमार ने किया। मिट्टी के प्रकार के हिसाब से किसानों को पौधों के क्लोन तैयार कर दिए जाएंगे।

हाजीपुर में खुले इस इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्टिविटी सेंटर में किसानों को पोपलर के पौधे लगाने की ट्रेनिंग दी जाएगी। किसानों को पौधे लगाने से लेकर वैज्ञानिक खेती के गुर सिखाए जाएंगे। बिहार के किसानों को पोपलर, लाह के पेड़ और बांस की कई प्रजातियां मुफ्त उपलब्ध करायी जाएंगी।

मालूम हो कि हाजीपुर में इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्टिविटी सेंटर 2006 से ही काम कर रहा था लेकिन अभी तक इसका विधिवत रूप से संचालन नहीं हो रहा था। यहां से वैशाली जिले के लोगों को 76 लाख के ज्यादा पोपलर के पौधे दिए जा चुके हैं। वैज्ञानिक आदित्य कुमार ने बताया कि 61 लाख पौधे सेमल, कदम और अन्य के दिए गए हैं। उद्घाटन के मौके पर रांची वानिकी अनुसंधान केन्द्र से 10 वैज्ञानिक और कर्मचारी आए थे। उन्हें वानिकी अनुसंधान महानिदेशक डा. अश्वनी कुमार ने खास रूप से ट्रेनिंग दी।

वैज्ञानिकों को भी बताए गए पेड़ लगाने के गुरः इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्टिविटी सेंटर में पोपलर के लाखों पौधे तैयार किए जा रहे हैं। सेंटर के उद्घाटन के बाद निदेशक श्री कुमार ने जब पोपलर के तैयार किए गए पौधों को देखा तो उन्हें कई खामियां नजर आयीं। उन्होंने वैज्ञानिकों को भी पौधे लगाने के गुर सिखाए।

सोमवार को हाजीपुर के जढुआ में स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट प्रोडक्टिविटी सेंटर में पोपलर के पौधों को देखते महानिदेशक सह देहरादून वन अनुसंधान संस्थान एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अश्विनी कुमार एवं अन्य वैज्ञानिक।

76 लाख से ज्यादा पोपलर के पौधे दिए जा चुके हैं वैशाली के लोगों को

10 वैज्ञानिक और कर्मचारी आए थे रांची वानिकी अनुसंधान केंद्र से

छह साल में तैयार हो जाएंगे पोपलर के पेड़

हिन्दुस्तान से हुई बातचीत में महानिदेशक सह देहरादून वन अनुसंधान संस्थान एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कुमार ने बताया कि पोपलर के पेड़ छह साल में तैयार हो जाते हैं। लाह के पेड़ डेढ़ साल और बांस के पौधे तीन साल में तैयार हो जाते हैं। एक एकड़ में पोपलर लगाने वाले किसान को सालाना डेढ़ लाख का फायदा है। वन विभाग उसे खरीद लेता है। इसकी लकड़ी माचिस की तिल्ली, प्लाई उड, फल के डिब्बे आदि बनाने में काम आती है। उन्होंने कहा कि रांची से बांस की कई प्रजातियां यहां शीघ्र लगायी जाएंगी। उसका पैसा भी आ गया है। इससे किसानों को काफी फायदा होगा। किसानों को पौधों की देखरेख के लिए पैसे भी मिलते हैं। इस मौके पर देहरादून वन अनुसंधान संस्थान एवं विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एसपी सिंह, उप महानिदेशक शैबाल दास गुप्ता, उपमहानिदेशक एनएस बिस्ट, वन अनुसंधान संस्थान की निदेशक श्रीमती सविता, वन अनुसंधान संस्थान के बीएन खान, बिहार के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं नीति आयोग के डा. एके जैन एवं डा. इंदु पटनायक आदि थे।

पोपलर के पेड़ लगाने के वक्त बरतें सावधानी

पोपलर के पेड़ से किसानों को काफी फायदा है। यह पेड़ छह साल में काफी मोटा हो जाता है और ढ़ाई से तीन हजार में बिकता है। दूसरा फायदा यह है कि खेत के किनारे-किनारे लगाया जाता है और इस पेड़ से छाया नहीं होती है। तीसरा फायदा यह है कि पेड़ लगने के बाद भी किसान आराम से खेती कर सकते हैं। पौधे लगाने के लिए साढ़े तीन फीट गड्ढा होना आवश्यक है। जड़े अंदर की ओर जाएंगी व जमीन को बर्बाद नहीं करेंगी। एक पेड़ से दूसरे पेड़ के बीच में 13 फीट की दूरी होनी चाहिए। वैज्ञानिक आदित्य ने बताया कि किसान दो-दो या ढ़ाई फीट गड्ढा कर पौधे लगा देते हैं।